2017

HINDI

[Honours]

PAPER – II

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15 × 2

(क) 'कबीर ने जाति-व्यवस्था, ऊँच-नीच के भेदभाव और छुआछूत आदि का खण्डन किया है''-इस कथन के आधार पर कबीर के समाज-दर्शन को स्पष्ट कीजिए ।

(*ख*)तुलसी की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए ।

(*ग*) घनानंद की प्रेम-व्यंजना को स्पष्ट कीजिए ।

(*घ*) बिहारी की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

(*ङ*) "कृष्ण की बाल-लीलाओं का जो अद्भुत और मनोहर वर्णन सूर ने किया है , वह हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है" — सोदाहरण इस कथन पर विचार कीजिए ।

2. किन्हीं *चार* काव्यांशों की सन्दर्भसहित व्याख्या कीजिए : 8 × 4

(*क*) अकुलानि के पानि पर्‌यौ दिनराति सुज्यौ
छिनकौ न कहुँ बहरै ।
फिरिबोई करै चित चेटक चाक लौं धीरज
को ठिकु क्यौं ठहरै ।
भये कागद नाव उपाव सबै घनआनन्द
नेह नदी गहरै ।
बिन जान सजीवन कौन हरै सजनी बिरहा-
विष की लहरै ।।

(ख)सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं
जानकी जानी भली ।
तिरछे करि नैन, दै सैन तिन्हैं समुझाइ कछु,
मुसुकाइ चली ।।
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति
लोचनलाहु अली ।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदै मनौ
मंजुल कंजकली ।।

(ग) गगनघटा घहरानी साधो, गगनघटा घहरानी ।
पूरब दिस से उठी है बदरिया, रिमझिम बरसत पानी ।
आपन-आपन मेंड़ सम्हारो, बहयौ जात बह पानी ।
सुरत-निरत का बेल नहायन, करै खेत निर्वानी ।
धान काट मार घर आवै, सोई कुसल किसानी ।
दोनों थार बराबर परसैं, जेवैं मुनि और ज्ञानी ।।

(घ) फागुन पवन झँकोरै बहा । चौगुन सीउ जाइ किमि सहा ।
तन जस पियर पात भा मोरा बिरह न रहे पवन होइ झोरा ।
तरिवर झरै झरै बन ढाँका । भइ अनपत्त फुल फर साखा ।
करिन्ह बनाफति कीन्ह हुलासू । मो कहँ भा जग दून
उदासू ।
फाग करहि सब चाँचरि जोरी । मोहिंजिय लाइ दीन्हि
जसि होरी ।

जौं पै पियहि जरत अस भावा । जतर भरत मोहि
रोस न आवा ।
रातिहु देवस इहै मन मोरें । लागौं कंत छार जेउँ तोरें ।
यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाउ ।
मकु तेहि मारग होइ परौं कंत धरै जहँ पाउ ।।

(ङ) कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात ।
भरे भौन में करत हैं नैननि ही सों बात ।।
कोटि जतन कोऊ करौं परै न प्रकृतिहि बीच ।
नल बल जल ऊँचे चढ़ै अंत नीच को नीच ।।

(च) अबिगत गति कछु कहत न आवै ।
ज्यौं गूँगे मीठे फल को रस अंतरगतहीं भावै ।
परम स्वाद सब ही सु निरंतर अमित तोष उपजावै ।
मन बानी कौ अगम अगोचर सो जानै जो पावै ।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति बिनु निरालंब कित धावै ।
सब बिधि अगम बिचारहि तातै सूर सगुन पद गावै ।

3. निम्नलिखित किन्हीं *आठ* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1 × 8

(क) 'वियोगबेलि' किस कवि की रचना है ?

(ख) 'सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि' — किस कवि के लिए प्रयुक्त होता है ?

(ग) 'अष्टछाप' की स्थापना किसने की ?

(घ) 'बिहारी सतसई' में किस नरेश की प्रशंसा में दोहा मिलता है ?

(ङ) 'भूषन बिनु न बिराजई कविता बनिता मित्त'-किस कवि की प्रसिद्ध पंक्ति है ?

(च) 'कवितावली' की भाषा क्या है ?

(छ) 'पग पग होतु प्रयागु' का अर्थ लिखिए ।

(ज) भूषण कृत किसी एक ग्रंथ का नाम लिखिए ।

(झ) 'पद्मावत' की भाषा क्या है ?

(ञ) किस कवि को हिन्दी रीतिकाव्य का प्रथम आचार्य माना जाता है ?

4. किन्हीं *पाँच* पर टिप्पणी लिखिए : 4 × 5

(क) घनानंद की विरह भावना

(ख) गुरू के प्रति कबीर की भावना

(ग) भूषण की काव्य भाषा

(घ) जायसी का सामान्य परिचय

(ङ) बिहारी की भक्ति भावना

(च) सूरदास की वाक् चातुरी

(छ) केशवदास का आचार्यत्व

(ज) तुलसी की समन्वय भावना ।